शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2013

# जखनियां तहसील, गाजीपुर जनपद (उ.प्र.) में सेवा केन्द्रों का क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप

डा. अजीत कुमार यादव
प्राचार्य गुरूकुल महाविद्यालय
पत्थलगांव, जशपुर (छ.ग.), भारत

शोध संक्षेप

*प्रस्तुत शोध प्रपत्र में जखनियां तहसील में सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप का अध्ययन किया गया है। क्षेत्र में जनसंख्या एवं सेवा केन्द्रों के वितरण में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है। यहां पदानुक्रम वर्ग के बड़े आकार वाले सेवा केन्द्र नगरीय क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक सेवाओं के विकास के कारण अधिक तथा ग्रामीण क्षेत्रों में जहां इन सेवाओं का कम विकास हुआ है वहां सेवा केन्द्र छोटे पाये जाते हैं। सेवा केन्द्र क्षेत्रीय विकास में एक नया आयाम प्रस्तुत करते है, जिनके वितरण में स्थानीय कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अध्ययन क्षेत्र मध्य गंगा मैदान के उपजाऊ जलोढ़ मैदान में स्थित है। यहां सेवा केन्द्रों के वितरण हेतु अनुकूल दषायें उपलब्ध हैं।*

## भूमिका-

सेवा केन्द्र क्षेत्रीय महत्व के ऐसे केन्द्र होते हैं जो सेवायें एवं सुविधायें क्षेत्र के लोगों को प्रदान करते है। वे परिवहन मार्गो द्वारा आपस में जुड़े होते हैं। सेवा केन्द्र प्राथमिक रूप से समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करने हेतु जन्म लेते है। अतः इन सेवा केन्द्रों को ग्रामीण सेवा केन्द्र भी कहते है। ये ग्रामीण क्षेत्रों को सेवाएं एवं सुविधायें प्रदान करने के लिये सदैव तत्पर रहते है तथा उनके बदले में अनेक प्राथमिक उत्पादों को तैयार माल में बदलकर अन्य दूरस्थ स्थानों पर भेजते हैं। सेवा केन्द्र समीपवर्ती कितनी दूर तक के क्षेत्रों पर अपना प्रभाव डालता है। यह उसके कार्यिक स्तर एवं आकार पर निर्भर करता हैं। यदि सेवा केन्द्र छोटा है तो वह कम सुविधायें रखता है तथा उसका क्षेत्र कम विस्तृत होगा, साथ ही वह अनेक उच्च सेवाओं के लिये बड़े सेवा केन्द्रों पर निर्भर होगा। ये सेवा केन्द्र अपने पदानुक्रमिक आकार के अनुसार ही क्षेत्र में सेवाओं एवं सुविधाओं को प्रदान करके क्षेत्रीय विकास का आधारीय ढ़ाचा तैयार करते हैं 1।

## विधितंत्र-

जखनियां तहसील में चयनित सेवा केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप निकटतम पड़ोसी बिन्दु विश्लेषण विधि द्वारा ज्ञात किया गया है तथा सांख्यिकी विधि द्वारा सेवा केन्द्रों का घनत्व एवं परिकल्पित दूरी ज्ञात करके यादृच्छिक वितरण उनके मूल्य के अनुरूप सेवा केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप निरूपित किया गया है।

## अध्ययन क्षेत्र-

जखनियां तहसील पूर्वी उत्तर प्रदेश गाजीपुर जनपद के उत्तरी भाग में 250

37'से 250 51' उत्तरी अक्षांश एवं 830 10'से 830

32'पूर्वी देशांतर के मध्य 666.70 वर्ग क्षेत्र में स्थित है। यह क्षेत्र पूर्व में गाजीपुर तहसील से, दक्षिण-पश्चिम में सैदपुर, उत्तर-पश्चिम में आजमगढ़ जनपद से घिरा हुआ है। प्राकृतिक दृष्टिकोण से जखनियां तहसील की उत्तरी-पूर्वी सीमा भैंसही नदी द्वारा एवं उत्तरी-पश्चिमी सीमा बेसो नदी द्वारा निर्धारित होती है। उत्तरी से दक्षिण की चौडाई 20 किमी. एवं पूर्व से पश्चिम की ओर लम्बाई 28 किमी है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से जखनियां तहसील में तीन विकासखण्ड, 31 न्याय पंचायतों, 577 ग्रामों में विभक्त है। यह क्षेत्र समुद्रतल से 71 मीटर ऊँचाई पर स्थित है। इसका ढ़ाल पश्चिम से पूर्व की ओर है।

सेवा केन्द्र ऐसे स्थल होते हैं, जो आधुनिकीकरण तथा निम्न स्तर के अधिवासों के सान्द्रण को जन्म देने वाले सामाजिक-आर्थिक नीतियों के रूप में उपयोग किये जाते हैं। किसी भी क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक एवं क्षेत्रीय विकास में सेवा केन्द्र ध्रुवीय भूमिका निभाते हैं। क्षेत्रीय नियोजन के विभिन्न उपागमों में सेवा केन्द्र नियोजन उपागम सर्वाधिक उपयुक्त है, क्योंकि सेवा केन्द्र आर्थिक क्रियाओं व सामाजिक सुविधाओं के विकेन्द्रीकरण का आधारीय ढ़ांचा तो प्रस्तुत ही करता है साथ ही स्थानीय जनसंख्या के लिए सामाजिक सुविधाओं के संकेन्द्रण हेतु उपयुक्त स्थलों का मार्ग प्रशस्त करता है। यह विकास के अभाव में अव्यवस्थित प्रादेशिक अर्थव्यवस्थाओं की समस्याओं को सुलझाने के साथ-साथ क्षेत्र के स्थानीय आर्थिक परिवर्तन में प्रभावी यन्त्र के रूप में कार्य करता है। किसी भी क्षेत्र में सेवा केन्द्रों की अवस्थिति वितरण प्रतिरूप के अध्ययन तथा विश्लेषण में दो तथ्यों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

अवस्थित विश्लेषण- सेवा केन्द्र धरातल पर कहां-कहां स्थित हैं एवं उनकी क्षेत्रीय सम्बद्वता किस प्रकार की है।

वितरण प्रतिरूप- सेवा केन्द्रों के अवस्थिति विश्लेषण से जो स्वरूप उभर कर सामने आता है, उसे वितरण प्रतिरूप कहते हैं। वितरण का यह प्रतिरूप विरल, सघन अथवा यादृच्छिक हो सकता है। सेवा केन्द्रों का धरातल पर यथार्थ स्थिति जन्य प्रारूप का बोध वितरण प्रतिरूप कराता है।

मानव अधिवासों का वितरण प्रतिरूप स्थानीय कारकों से नियंत्रित होता हैं, जो भूगोलवेत्ताओं के अध्ययन का प्रमुख विषय वस्तु रहा है, जिनके द्वारा विभिन्न सिद्वान्तों व संकल्पनाओं का प्रतिपादन किया गया। गालफिन 2 (1918) के अनुसार सेवा केन्द्र त्रैज्य वृत्तीय क्रम में वितरित होते है, जिसमें उच्च कोटि के सेवा केन्द्रों के सेवा क्षेत्र निम्न कोटि के सेवा केन्द्रों के सेवा क्षेत्र की अपेक्षा बड़े वृत्तखण्डों द्वारा प्रदर्शित होगें। इसमे 6 सेवा केन्द्रों के लिए 6 वृत्त बराबर दूरी पर एक दूसरे पर अध्यारोपित होते हुये बनेंगे। अध्यारोपण के कारण सेवा केन्द्रों के नियमित वितरण के लिए ये वृत्त खण्ड एक आदर्श प्रस्तुत करने में असफल रहे हैं।

किस्ट्रालर 3 (1933) ने दक्षिणी जर्मनी के अधिवासों के स्थानीय विशेषताओं के विश्लेषण हेतु अपने केन्द्रस्थल सिद्धान्त का प्रतिपादन

किया तथा अन्तराल एवं आरोपण की समस्या को दूर करने के लिए वृत्तखण्डों के स्थान पर षष्टभुजाकार प्रादर्श सभी केन्द्रस्थल अपने सेवा क्षेत्रों में वस्तुएं एवं सेवायें समान रूप से वितरित करता है तथा विभिन्न केन्द्रों के मध्य प्रतिस्पर्धा की भावना की संम्भावना को समाप्त कर देता है। विपणन सिद्धान्त (K=3) के अनुसार केन्द्र के बीच की दूरी √3 के नियम से बढ़ती है। इनके अनुसार वृहद आकार वाले केन्द्रस्थलों की संख्या कम एवं दूर-दूर स्थित होगें तथा छोटे आकार वाले केन्द्रस्थलों के आकार की स्थिति इसके विपरीत होगी। इस प्रक्रिया में विभिन्न पदानुक्रम वर्ग के केन्द्रों का क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप मानव अधिवासों के सन्दर्भ में समय एवं दूरी को ध्यान में रखकर होना चाहिए। इस सन्दर्भ में मिश्रा 4 (1983) ने वृद्धि केन्द्र (Growth Foci) की संकल्पना को विकसित किया तथा स्पष्ट किया है कि विभिन्न पदानुक्रमिक वर्ग के वृद्धि केन्द्र क्षेत्र के सन्दर्भ में समाजिक-आर्थिक रूपान्तरण के केन्द्र बन सकते हैं। भारतीय संदर्भ में इन्होंने 4 वृद्धि केन्द्र को स्पष्ट किया है। -(i) स्थानीय स्तर पर सेवा केन्द्र (ii)उप क्षेत्रीय स्तर पर विकास बिन्दु, (iii) क्षेत्रीय स्तर पर विकास केन्द्र, (iv) राष्ट्रीय स्तर पर विकास। ध्रुव पाण्डेय 5 (1972) ने गंगा-गोमती द्वाव में मानव अधिवासों का वितरण सामाजिक आर्थिक विकास के संदर्भ में वितरण प्रस्तुत किया है। सिंहा एवं यादव 6 (2012) ने गाजीपुर जनपद में सेवा केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप परिवहन संचार विपणन शिक्षा स्वास्थ्य एवं आर्थिक क्रियाओं के संदर्भ में प्रस्तुत किया है।

सेवा केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप-

किसी भी क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप का अध्ययन भूगोल का एक महत्वपूर्ण विषय है। सेवा केन्द्रों के वितरण से उनके तन्त्र का ज्ञान होता है तथा क्षेत्र विशेष के भावी विकास के लिए एक योजना के निर्धारण के साथ ही उसका यर्थाथ रूप भी परिलक्षित होता है। अतः यह आवश्यक है कि क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप के अध्ययन द्वारा पड़ने वाले प्रभावों का आंकलन सरलता से हो जाता है।

निकटतम पड़ोसी बिन्दु विश्लेषण - जखनियां तहसील में सेवा केन्द्रों के स्थानिक वितरण प्रतिरूप के निर्धारण के लिए क्लार्क एवं इवांस 7 द्वारा प्रतिपादित निकटतम पड़ोसी बिन्दु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि में सेवा केन्द्रों को निकटतम स्थित केन्द्र से सीधी रेखाओं द्वारा मिला दिया गया है (चित्र संख्या 1.1A)।

अवस्थिति वितरण प्रतिरुप-

सेवा केन्द्रों का अवस्थितिक वितरण प्रतिरूप क्षेत्र में उनकी सापेक्षिक अवस्थिति को व्यक्त करता है। सेवा केन्द्र की स्थिति नगरीय हो या ग्रामीण हो, उनके वितरण का अध्ययन सांख्यिकीय विधि से अधिक उपयोगी माना जाता है। क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप को दर्शाने के लिए निकटतम पड़ोसी बिन्दु दूरी का उपयोग किया गया है। जखनियां तहसील का कुल क्षेत्रफल 666.7 वर्ग किमी. है, जिसमें कुल चयनित सेवा केन्द्रों की संख्या 28 है। क्षेत्र में सेवा केन्द्रों का घनत्व एवं परिकल्पित दूरी का आकलन मैथर 8 के सूत्र के आधार पर ज्ञात कर तालिका संख्या 1.1 में प्रस्तुत किया गया है।

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2013

सूत्रः-

d = A/D

d = केंद्र स्थलों का घनत्व

A = कुल क्षेत्रफल

D = क्षेत्र में सेवा केन्द्रों की संख्या

क्षेत्र में सेवा केन्द्रों का औसत घनत्व 23.81 वर्ग किमी है। सेवा केन्द्रों का सर्वाधिक घनत्व मनिहारी विकासखण्ड में 24.93 वर्ग किमी एवं सबसे कम घनत्व जखनियां विकासखण्ड में 22.69 वर्ग किमी है।

सेवा केन्द्रों की परिकल्पित दूरी (किमी. में)- क्षेत्र में स्थित सेवा केन्द्रों की परिकल्पित दूरी का आंकलन मैथर के सूत्र के आधार पर किया गया है।

सूत्रः-

D = 1.0746 √A/N

D = परिकल्पित दूरी

A = कुल क्षेत्रफल

N = सेवा केन्द्रों की संख्या

तालिका संख्या 1.1

जखनियां तहसील में सेवा केन्द्रों का सेवित क्षेत्र एवं परिकल्पित दूरी

| क्रम संख्या | विकास खण्डों का नाम | क्षेत्र फल (किमी) | सेवा केन्द्रों की संख्या | सेवा केन्द्रों का सेवित क्षेत्र (वर्ग किमी) | परिकल्पित दूरी | वितरण की दशाएं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | जखनिया | 204.20 | 9 | 22.69 | 5.12 | सघन |
| 2 | मनिहारी | 224.40 | 9 | 24.93 | 5.37 | विरल |
| 3 | सादात | 238.10 | 10 | 23.81 | 5.24 | सघन |
| औसत योग | | **666.70** | **28** | **23.81** | **5.24** | सघन |

तालिका संख्या 1.1 एवं चित्र संख्या 1.1 B से स्पष्ट है कि क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के बीच की औसत परिकल्पित दूरी 5.24 किमी. है। सबसे अधिक परिकल्पित दूरी मनिहारी विकासखण्ड में 5.37 किमी. एवं सबसे कम जखनिया विकासखण्ड में 5.12 किमी. है। यदि इन सेवा केन्द्रों के वितरण को देखे तो स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में अवस्थिति का वितरण प्रतिरुप दो प्रकार का है।

(i) सघन वितरण- सेवा केन्द्रों का सघन वितरण जखनियां एवं सादात विकासखण्ड में पाया जाता है, जिसकी स्थित उत्तरी भाग में है। क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के विकास के लिए अनुकूल भौगोलिक एवं

सास्कृतिक दशायें विद्यमान हैं। क्षेत्र के 67.86% सेवा केन्द्र स्थित है, जिनकी परिकल्पित दूरी 5.12 एवं 5.24 किमी. है, जो क्षेत्र के औसत वितरण के समतुल्य है।

(ii) विरल वितरण- मनिहारी विकासखण्ड में सेवा केन्द्रों का विरल वितरण प्रतिरूप पाया जाता है, जिसकी स्थिति दक्षिणी भाग में है क्षेत्र के 32.14% सेवा केन्द्र एवं परिकल्पित दूरी 5.37 किमी. है। यहां पर सेवा केन्द्रों के विकास के लिए भौगालिक परिस्थितियां बाधक है।

प्रकीर्णन विश्लेषण-

प्रकीर्णन विश्लेषण में निकटतम पड़ोसी बिन्दु विश्लेषण विधि का प्रयोग सर्वप्रथम क्लार्क एवं ईवांश (1954) ने किया है। क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के निकटतम पड़ोसी बिन्दु विश्लेषण सूचकांक ज्ञात करने के लिये डेसी 9 एवं किंग 10 (1962) द्वारा प्रतिपादित सूत्र का उपयोग किया गया है, जो इस प्रकार है।

सूत्रः-

$RN = D/0.50 \sqrt{A/N}$

जहाँ पर RN = निकटम पड़ोसी सूचकांक

D = निकटतम पड़ोसी केन्द्र से औसत दूरी

A = सम्पूर्ण क्षेत्रफल

N = कुल केन्द्रों की संख्या

यादृच्छिक संकल्पना-

यादृच्छिक संकल्पना का अध्ययन निकटतम पडोसी बिन्दु विश्लेषण का प्रमुख विषय है। यदि किसी क्षेत्र में बिन्दुओं का वितरण अनियमित रुप से दिखाया जाय तो उसे यादृच्छिक वितरण कहते हैं। किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि सभी प्रकार के वितरण यादृच्छिक ही हो। अतः इसके लिए RN मूल्य की परख करते हैं, जिससे ज्ञात होता है कि कोई भी मूल्य यादृच्छिक वितरण से कितना साम्य या विचलन रखता है। अतः निकटतम पड़ोसी दूरियों के माध्य तथा क्षेत्रफल की तुलना से प्राप्त मूल्य को निकटतम पडोसी स्थिरांक या मूल्य कहा जाता है। निकटतम पड़ोसी दूरियों के माध्य एवं क्षेत्रफल एक मापक प्रणाली में होना आवश्यक है। यदि किसी वितरण में यादृच्छिक वितरण नहीं है, तो इसका तात्पर्य यह होगा कि या तो वह यादृच्छिक से कम या पूंजीभूत वितरण होगा। इस प्रकार यह वितरण निम्न प्रकार का हो सकता है। निकटतम पडोसी स्थिरांक (RN मूल्य) के सम्बन्ध मुख्य तथ्य निम्नवत है-

(i) RN मूल्य 0 से 2.15 तक हो सकता है। यदि RN मूल्य 1.0 आता है तो वह वितरण यादृच्छिक वितरण की प्रत्याशित दशा के बिल्कुल अनुरूप है। यदि RN मूल्य 1.00 के जितना सन्निकट होगा यादृच्छिक वितरण की मात्रा उतनी ही अधिक होगी।

(ii) यदि RN मूल्य 0.00 है, तो ऐसी दशा में बिन्दुओं का वितरण पूंजीभूत होगा और सभी बिन्दु एक ही केन्द्र में केन्द्रित होंगे।

(iii) यदि RN मूल्य 2.15 आता है, तो ऐसी दशा में बिन्दुओं बिन्दु का वितरण सम होगा, क्योंकि विचलन जितना ही कम होगा, सेवा केन्द्रों का वितरण उतना ही नियमित होगा तथा विचलन

जितना ही अधिक होगा एवं सेवा केन्द्रों का वितरण उतना ही अनियमित होगा।

सेवा केन्द्रों का स्थानिक वितरण प्रतिरूप मात्र उसके रचना व्यवस्था को ही प्रकट नहीं करता वरन् क्षेत्र के भू-वैन्यासिक संगठन के आधार को भी स्पष्ट करता है। सेवा केन्द्र अपने चतुर्दिक विस्तृत सेवित क्षेत्र की ऊपज होते हैं, जहां वह अपनी वस्तुओं एवं सेवाओं के आदान-प्रदान के माध्यम से सम्पूर्ण क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक क्रियाओं को नियन्त्रित करने लगते है। इस प्रकार सेवा केन्द्र ग्रामीण विकास के क्रिया कलाप की धुरी होने के कारण विकास कार्यों की धुरी के रूप में कार्य करते हैं। अतः इनके सुव्यवस्थित वितरण से ही समन्वित ग्रामीण विकास संभव होता है। इसके अतिरिक्त एक ओर जहाँ क्षेत्र में उनके गुम्फन का ज्ञापन होता है, तो दूसरी ओर उस क्षेत्र के भावी विकास योजना के निर्धारण में सेवा केन्द्रों की जो संकल्पना है, वह यथार्थ रूप में उजागर होता है। क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के निकटतम दूरियों का मापन करके डेसी एवं किंग की विधि द्वारा उनके वितरण का विश्लेषण (RN मूल्य) कर तालिका संख्या 1.2 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या 1.2
जखनियां तहसील में सेवा केन्द्रों का वितरण विश्लेषण

| क्रम संख्या | विकास खंडो का नाम | क्षेत्रफल किमी | सेवा केन्द्रों की संख्या | सेवा केन्द्रों की दूरी किमी में | सेवा केन्द्रों की औसत दूरी किमी में | RN मूल्य | प्रकीर्णन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | जखनिया | 204.20 | 9 | 14.90 | 1.66 | 0.70 | 1 |
| 2 | मनिहारी | 224.40 | 9 | 19.50 | 2.17 | 0.87 | 1 |
| 3 | सादात | 238.10 | 10 | 28.90 | 2.89 | 1.18 | 2 |
| औसत योग | | **666.70** | **28** | **63.30** | **2.24** | **0.91** | **2** |

तालिका संख्या 1.2 एवं चित्र संख्या 1.2 ब् से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र का औसत RN मूल्य 0.91 है जो यादृच्छिक मूल्य (1.00) से कम है। अतः इसे यादृच्छिक मूल्य की श्रेणी में रखा जा सकता है एवं इसे लघु नियमित प्रकार का वितरण कहा जा सकता है। अध्ययन की सरलता के लिए दो वर्गो में विभक्त किया जा सकता है।

(i) प्रथम वर्ग में क्षेत्र के दो विकासखण्ड जखनियां एवं मनिहारी सम्मिलित है, जिसका RN मूल्य क्रमशः 0.70 एवं 0.87 है। यह वितरण यादृच्छिक है इस वर्ग का कुल क्षेत्रफल 428.6 वर्ग कि.मी. एवं सेवा केन्दों की संख्या 18 है। इस वर्ग के प्रमुख सेवा केन्द्र जखनियां, दुल्लहपुर, हंसराजपुर, मनिहारी जलालाबाद, शादियाबाद एवं मलिकापुरा आदि है।

(ii) द्वितीय वर्ग में सादात विकासखण्ड सम्मिलित है जिसका RN मूल्य 1.18 एवं सेवा केन्द्रों की संख्या 10 है। इस वर्ग का कुल क्षेत्रफल

238.1वर्ग किमी. है। इसवर्ग के प्रमुख सेवा केन्द्र सादात, मिर्जापुर, वहरियाबाद, सलेमपुर एवं भीमापार आदि हैं।

स्पष्ट है कि क्षेत्र में सेवा केन्द्रो का सेवित क्षेत्र एवं परिकल्पित दूरी तथा वितरण विष्लेषण के तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि सादात विकासखण्ड मे ंसेवा केन्द्रो की संख्या अधिक है परन्तु उनका वितरण विरल होने के कारण उनके वीच की दूरी अधिक है, जिससे उनके बीच की औसत दूरी अधिक पायी जाती है। इसलिए उनका वितरण विष्लेषण विरल पाया जाता है, जबकि जखनियां एवं मनिहारी विकासखण्ड में सेवा केन्द्रों की सख्या कम है तथा वितरण सघन होने से उनके बीच की औसत दूरी कम है जिससे इस क्षेत्र मे सेवा केन्द्रों का वितरण सघन पाया जाता है।

सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारक-

किसी भी क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के उद्भव विकास एवं वितरण प्रतिरूप के निर्धारण में प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक कारकों का प्रभावी योगदान होता है। क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारक को निम्न वर्गो में रखा जा सकता है।

(1) प्राकृतिक कारक-प्राकृतिक कारकों के अन्तर्गत उच्चावच, जल प्रवाह प्रणाली, मिट्टी की उर्वरता, जल की सुलभता, जलवायु, बाढ़ एवं सूखा को सम्मिलित किया जाता है। क्षेत्र मध्य गंगा के समतल मैदानी भाग में स्थित है,जहां भूमि की समतलता ने सेवा केन्द्रों के विकास हेतु आदर्श दशाएं प्रस्तुत की हैं। समतल भूमि, उपजाऊ कांप मिट्टियों की प्राप्यता, जल की सुलभता एवं उत्तम जलवायु ने आदिकाल से ही मानव को मनमोहित किया है। फलस्वरूप क्षेत्र में आदि काल से ही ग्रामीण व नगरीय अधिवासों का विकास हुआ। प्राचीन काल में जब रेल व सड़क परिवहन तन्त्र का विकास नहीं हुआ था, तब क्षेत्र में गंगा की सहायक नदियों द्वारा जल यातायात की सुविधा के कारण सेवा केन्द्रों का उद्भव एवं विकास हुआ।

(2) सांस्कृतिक कारक-सेवा केन्द्र सांस्कृतिक भूदृश्य के प्रधान अंग होते हैं। ये किसी भी क्षेत्र के भूवैन्यासिक संगठन के प्रधान अंग होते है। किसी भी क्षेत्र में भू-वैन्यासिक संगठन के निर्माण में नगरीय केन्द्रों अथवा सेवा केन्द्रों अथवा अधिवासों का वहां के भूमि उपयोग के संगठन का प्रमुख योगदान होता है। अतः किसी भी क्षेत्र के सेवा केन्द्रों के उद्भव, विकास एवं वितरण में वहाँ के सांस्कृतिक कारकों का प्रभावी योगदान होता है, जिन्हें अध्ययन की सुविधा हेतु निम्न प्रकार से लिपिबद्व किया जा सकता है।

(i) जनसंख्या- जनसंख्या के वितरण, मानव अधिवास एवं सेवा केन्द्रों के वितरण में उच्च घनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले कारक (धरातल, जलवायु, मिट्टी, बाढ़, जलप्लावन एवं परिवहन तन्त्र) ही सेवा केन्द्र में भी स्पष्टतः परिलक्षित होते हैं। क्षेत्र में जनसंख्या एवं सेवा केन्द्रांे के वितरण में समानता पायी जाती है। सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में सेवा केन्द्रों की अधिकता है जबकि कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों में इनकी संख्या कम पायी जाती है। (ii) भूमि का उपजाऊपन एवं कृषि सघनता-भूमि की उत्पादकता एवं कृषि सघनता अधिवासों के उद्भव,

विकास एवं वितरण को प्रभावित करती है। क्षेत्र के मध्य भाग की भूमि अधिक उपजाऊ है, जिससे इन क्षेत्रों में अधिवासों का जमाव अधिक हुआ है। इस क्षेत्र की जनसंख्या का विभिन्न सेवाओं की पूर्ति हेतु सेवा केन्द्रों का विकास अधिक हुआ है।

(iii) परिवहन तन्त्र- परिवहन तन्त्र किसी भी क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक रूपान्तरण में आधारीय भूमिका निभाता है। मानव अधिवासों व सेवा केन्द्रों के विकास हेतु आदर्श दशाओं को उपस्थित करता है। किसी देश के नगरीय केन्द्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रों की गतिशीलता निर्धारित करते हुए उनके विकास को निर्धारित करती है। सड़कें एवं उनके संगम स्थल विकास बिन्दुओं और नगरीय केन्द्रों के विकास में धुरवीय भूमिका निभाते हैं। परिवहन तन्त्र का सेवा केन्द्रों के विकास में आधारीय योगदान होता है। सेवा केन्द्र एवं परिवहन तन्त्र एक ही आर्थिक प्रक्रिया के दो समान पहलू है। सेवा केन्द्र अपने पृष्ठप्रदेशों से परिवहन मार्गो द्वारा जुड़े होते है। परिवहन मार्गो पर बस स्टाप, रेलवे स्टेशन मिलान बिन्दुओं एवं नये मार्गो के सन्धि स्थलों पर सेवा क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। क्षेत्र के सभी सेवा केन्द्र किसी न किसी परिवहन मार्ग के सहारे ही स्थापित है। उदाहरण के लिए हंसराजपुर, मिर्जापुर एवं बरहट आदि नये सेवा केन्द्रों का उल्लेख है जो सन् 1970 के बाद परिवहन मार्गो के विकास के बाद अस्तित्व में आये। वर्तमान समय में परिवहन की सुविधा के विकास के कारण क्षेत्र में सर्वत्र सेवा केन्द्रों का विकास तीव्र गति हो रहा है। यथा रेल परिवहन के विकास के साथ ही स्टेशनों एवं हाल्टों के समीप सेवा केन्द्रो का उदभव हुआ है। उदाहरण के लिए हुरमुजपुर एवं नायकडीह आदि हैं।

(iv) प्रशासनिक कारक-प्रशासनिक केन्द्र स्वभावतः सेवा क्रिया को आकर्षित करते है। क्षेत्रों में तत्कालीन राजाओं, जमीदारों ने अपने प्रशासनिक मुख्यालयों पर सेवा केन्द्रों को स्थापित किया। यह प्रक्रिया आज भी तहसील मुख्यालयों, सामुदायिक विकास खण्डों एवं पुलिस थानों पर सेवा केन्द्रों की स्थापना को प्रभावित करती हंै। इन तथ्यों के प्रमाण स्वरूप मनिहारी, दुल्लहपुर, सादात, जखनियां, शादियाबाद एवं वहरियाबाद, आदि सेवा केन्द्रों का उल्लेख किया जा सकता है।

(v) ऐतिहासिक एवं धार्मिक कारक-धार्मिक केन्द्रों पर देवी-देवताओं के दर्शन एवं पूजन हेतु क्षेत्रीय जनता का एकत्रीकरण होता रहता है। इन धार्मिक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक स्थलों की मात्रा प्रायः बहुद्देशीय हो जाती हैं। धार्मिक केन्द्रों की उपयोगिताओं के समूहन से विक्रेतागण आकर्षित होते है, साथ ही ऐतिहासिक समय से ही स्थित केन्द्रों के चतुर्दिक सेवा केन्द्रों की स्थापना हो जाती है। उदाहण के लिए वहरियाबाद, शादियाबाद, धुर्वाजुन आदि सेवा केन्द्रों का उल्लेख है। जहाँ धुर्वाजुन में शिव मन्दिर की स्थापना ने हिन्दू धर्मावलम्बी को एकत्रित किया वहीं शादियाबाद एवं वहरियाबाद में मुस्लिम बहुल जनसंख्या के कारण मस्जिदों की उपस्थिति ने जनसंख्या के समूहन को अपनी ओर आकर्षित कर अधिवासित केन्द्रों को सेवा केन्द्रों के रूप में परिवर्तित कर दिया है।

स्पष्ट है कि सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप को प्रभावित करने में मुख्य रूप से उस क्षेत्र के प्राकृतिक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, प्रशासनिक व राजनैतिक तत्वों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। प्रभावी कारकों में क्षेत्रीय विविधता के कारण वितरण प्रतिरूप में अन्तर पाया जाना स्वाभाविक है। सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप सम्बन्धी एक प्रमुख सामान्य तथ्य यह सामने आया है कि इनकी स्थानिक दूरी को नियंत्रित करने वाला प्रमुख तत्व उनका आकार है। बड़े आकार के सेवा केन्द्रों की संख्या कम व उनके बीच की दूरी अधिक पायी जाती है, जबकि छोटे आकार के सेवा केन्द्रों की संख्या अधिक व उनके बीच की दूरी कम होती है।

## REFERENCES

1. Yadav,A.K.. (2008) Service Center & Integrated Rural Development: A Case Study of Ghazipur District, Unpublished Ph.D.Thesis D.D.U.Gorakhpur University Gorakhpur pp.64-72

2. Galpin, C.S.(1918) : Rural life New Yark P.87.

3. Christallar, W. (1933): Central places in southern Germany, translated by C.W.Baskin, Prentice Hall, Inc. Englewood clifts New Jersey ( 1966)

4. Mishra, R.P.(1983) : Contributions to India Geography-Concepts and Approaches, Heritage Publisher, New Delhi, P.P. 223-246.

5. Pandey, J.N. (1972) :Distribution of Rural Settlement in lower Ganga-Gomti Doab,U.B.B.P. Vol XIII, No.2 pp. 101 – 115.

6. Sinha, M.K.& Yadav, A.K. (2012) : Spatial Distribution of Service Centres in Ghazipur District. U.P., Educational Waves Vol VIII. No.2 pp. 61-66

7. Clark , P.T & F.C. Evans( 1954): Distance of Nearest Neighbour as Ecology 35, pp. 445-453

8. Mather, E.C. (1944): A Linear Distance Map of farm Population in the U.S.,A.A.A.G. pp-4.

9. Dacey,M.F ( 1962): Analysis of Central Place and Point Pattern By a Nearest Neiobour Method Lung studies in Geography Seeries, B.Human Geography 24P.P. 55-75.

10. King, L.J.(1962): A Quntitative Expression of the Pattern of Urban Settlements in selected areas of the united states, Tizdschrift in Voor Economische in social Geographic 53. pp. 1-7